IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय ज्ञान परम्परा (Indian Knowledge System) : एक व्यापक अध्ययन

(Indian Knowledge System in National Education Policy 2020: A Comprehensive Study)

आयुष गुप्ता

पी-एच.डी शोधार्थी

दयानंद वैदिक कॉलेज, उरई

डॉ. जीतेन्द्र प्रताप

असिस्टेंट प्रोफेसर

दयानंद वैदिक कॉलेज, उरई

सार (Abstract) –

भारतीय ज्ञान परम्परा (Indian Knowledge System – IKS) भारत की सभ्यता, संस्कृति और शिक्षा की आत्मा रही है। प्राचीन भारत में शिक्षा का उद्देश्य केवल जीविका अर्जन नहीं था, बल्कि चरित्र निर्माण, आत्म-विकास और सामाजिक उत्तरदायित्व का विकास करना था। औपनिवेशिक काल में भारतीय शिक्षा व्यवस्था अपने मूल स्वरूप से दूर होती चली गई, जिसके कारण भारतीय ज्ञान परम्परा को शिक्षा में उचित स्थान नहीं मिला। वर्ष 2020 में घोषित राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) ने भारतीय ज्ञान परम्परा को पुनः शिक्षा के केंद्र में लाने का सशक्त प्रयास किया है। नीति में वेद, उपनिषद, भारतीय दर्शन, योग, आयुर्वेद, गणित, खगोल विज्ञान, कला, साहित्य, नैतिकता और जीवन मूल्यों को आधुनिक शिक्षा से जोड़ने पर विशेष बल दिया गया है। प्रस्तुत शोधपत्र में NEP 2020 के संदर्भ में भारतीय ज्ञान परम्परा की अवधारणा, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, प्रमुख प्रावधान, शैक्षिक महत्व, मूल्य शिक्षा में भूमिका, समकालीन प्रासंगिकता, चुनौतियाँ एवं संभावनाओं का विस्तृत एवं सरल भाषा में विश्लेषण किया गया है।

कुंजी शब्द : राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, भारतीय ज्ञान परम्परा, IKS, मूल्य शिक्षा, भारतीय शिक्षा व्यवस्था।

1. भारतीय ज्ञान परम्परा : ऐतिहासिक एवं दार्शनिक पृष्ठभूमि :-

भारत को प्राचीन काल से ही "ज्ञानभूमि" के रूप में जाना जाता रहा है। भारतीय सभ्यता की आधारशिला ज्ञान, नैतिकता, संस्कृति और जीवन-मूल्यों पर टिकी हुई है। यहाँ ज्ञान को केवल सूचना या तथ्यों के संग्रह के रूप में नहीं देखा गया, बल्कि उसे जीवन को सही दिशा देने वाला माध्यम माना गया। प्राचीन भारतीय शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, नैतिक और आध्यात्मिक विकास को संतुलित रूप से आगे बढ़ाना था। इसी कारण भारतीय शिक्षा परम्परा को विश्व की सबसे प्राचीन, समृद्ध और समग्र शिक्षा परम्पराओं में गिना जाता है।

नालंदा, तक्षशिला, विक्रमशिला और वल्लभी जैसे प्राचीन विश्वविद्यालय भारतीय ज्ञान परम्परा की उत्कृष्टता के सशक्त प्रमाण हैं। इन शिक्षण संस्थानों में भारत के साथ-साथ एशिया और विश्व के अन्य देशों से भी विद्यार्थी अध्ययन हेतु आते थे। यहाँ वेद, उपनिषद, दर्शन, गणित, खगोलशास्त्र, आयुर्वेद, चिकित्सा, व्याकरण, तर्कशास्त्र, कला और साहित्य जैसे विविध विषयों का अध्ययन कराया जाता था । उस समय की शिक्षा बहुविषयक और समग्र थी, जो आधुनिक शिक्षा की अवधारणा से भी मेल खाती है। भारतीय शिक्षा व्यवस्था में गुरु–शिष्य परम्परा का विशेष महत्व था, जहाँ गुरु केवल विषय-ज्ञान देने वाले नहीं, बल्कि शिष्य के चरित्र निर्माण, नैतिक विकास और जीवन-दृष्टि के मार्गदर्शक भी होते थे । शिक्षा का उद्देश्य केवल आजीविका अर्जन नहीं, बल्कि एक जिम्मेदार, नैतिक और सामाजिक रूप से जागरूक नागरिक का निर्माण करना था । सत्य, धर्म, करुणा, अहिंसा और कर्तव्य जैसे मूल्य भारतीय ज्ञान परम्परा की आत्मा माने जाते हैं।

2. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय ज्ञान परम्परा (Indian Knowledge System) : –

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 यह स्पष्ट रूप से स्वीकार करती है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल आधुनिक और तकनीकी ज्ञान प्रदान करना नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों को उनकी सांस्कृतिक और बौद्धिक जड़ों से जोड़ना भी उतना ही आवश्यक है। इसी दृष्टिकोण के अंतर्गत नीति में भारतीय ज्ञान परम्परा को विशेष महत्व दिया गया है।

नीति के खण्ड 4.27 में वेद, उपनिषद, दर्शन, योग, आयुर्वेद, गणित, खगोलशास्त्र और लोकज्ञान जैसी भारतीय ज्ञान परम्पराओं को भारत की अमूल्य बौद्धिक विरासत माना गया है तथा इनके संरक्षण और संवर्धन पर बल दिया गया है। **खण्ड 4.28** यह स्पष्ट करता है कि भारतीय ज्ञान परम्परा को विद्यालयी और उच्च शिक्षा दोनों स्तरों के पाठ्यक्रमों में इस प्रकार सम्मिलित किया जाए, जिससे विद्यार्थी ज्ञान को भारतीय दृष्टिकोण से समझ सकें और उनमें सांस्कृतिक आत्मबोध विकसित हो। इसी क्रम में **खण्ड 4.29** इस तथ्य को रेखांकित करता है कि भारतीय ज्ञान परम्परा मुख्यतः भारतीय भाषाओं में संरक्षित है, इसलिए मातृभाषा और भारतीय भाषाओं में शिक्षा को प्रोत्साहित करना आवश्यक है।

उच्च शिक्षा के संदर्भ में, **नीति के खण्ड 11.4 और 11.5** विश्वविद्यालयों और उच्च शिक्षण संस्थानों को भारतीय ज्ञान पर आधारित पाठ्यक्रमों, शोध और अकादमिक गतिविधियों को बढ़ावा देने तथा उन्हें आधुनिक अनुसंधान और नवाचार से जोड़ने की दिशा प्रदान करते हैं। साथ ही, **खण्ड 17.4** शिक्षक शिक्षा में भारतीय दर्शन, नैतिक मूल्यों और जीवन-दृष्टि के समावेशन पर बल देता है, जिससे शिक्षक केवल ज्ञान प्रदान करने वाले न होकर मूल्य और संस्कारों के संवाहक बन सकें। इस प्रकार राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय ज्ञान परम्परा का समावेशन शिक्षा को अधिक मानवीय, सांस्कृतिक रूप से सशक्त और संतुलित बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल के रूप में सामने आता है।

3. भारतीय ज्ञान परम्परा : अर्थ एवं स्वरूप : -

भारतीय ज्ञान परम्परा से आशय उस समग्र ज्ञान व्यवस्था से है जो भारत में हजारों वर्षों से विकसित होती रही है। यह ज्ञान केवल सैद्धांतिक नहीं, बल्कि व्यावहारिक, नैतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक भी है।

भारतीय ज्ञान परम्परा में निम्नलिखित तत्व प्रमुख हैं—

- धर्म और कर्तव्यबोध
- सत्य, अहिंसा और करुणा
- गुरु–शिष्य परंपरा
- अनुभव आधारित अधिगम
- प्रकृति और मानव के बीच सामंजस्य

इस परम्परा में शिक्षा को जीवन जीने की कला के रूप में देखा गया है।

4. NEP 2020 : पृष्ठभूमि और आवश्यकता -

भारत में शिक्षा व्यवस्था लंबे समय से अनेक चुनौतियों का सामना कर रही थी। स्वतंत्रता के बाद वर्ष 1968 और 1986 में शिक्षा नीतियाँ बनाई गईं, परंतु बदलते सामाजिक, आर्थिक और तकनीकी परिवेश के अनुसार शिक्षा प्रणाली में अपेक्षित सुधार नहीं हो पाए। लगभग 34 वर्षों के अंतराल के बाद वर्ष 2020 में **राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020)** को एक समग्र, दूरदर्शी और परिवर्तनकारी शिक्षा नीति के रूप में प्रस्तुत किया गया। इस नीति का मुख्य उद्देश्य भारत की शिक्षा प्रणाली को 21वीं सदी की आवश्यकताओं के अनुरूप बनाना है।

NEP 2020 की पृष्ठभूमि को समझने पर यह स्पष्ट होता है कि वर्तमान शिक्षा व्यवस्था अत्यधिक पाठ्यक्रम-केंद्रित, परीक्षा-प्रधान और डिग्री आधारित हो गई थी। शिक्षा में रटने की प्रवृत्ति बढ़ गई थी, जबकि रचनात्मकता, आलोचनात्मक सोच, नैतिकता और जीवन कौशल जैसे महत्वपूर्ण पक्षों की अनदेखी हो रही थी। इसके साथ ही शिक्षा और रोजगार के बीच बढ़ती दूरी, विद्यार्थियों में तनाव, नैतिक मूल्यों का ह्रास और भारतीय संस्कृति से दूरी जैसी समस्याएँ भी सामने आ रही थीं। इन्हीं कारणों से एक नई और व्यापक शिक्षा नीति की आवश्यकता महसूस की गई।

NEP 2020 यह स्वीकार करती है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार उपलब्ध कराना नहीं है, बल्कि व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करना भी है। नीति के अनुसार शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो विद्यार्थियों को ज्ञान, कौशल और मूल्यों से युक्त बनाए। इसी दृष्टिकोण के अंतर्गत NEP 2020 भारतीय शिक्षा प्रणाली को वैश्विक मानकों के अनुरूप बनाते हुए उसे भारतीय संस्कृति और परम्परा से जोड़ने पर बल देती है।

इस नीति की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि यह **भारतीय ज्ञान परम्परा** को शिक्षा का आधार मानती है। NEP 2020 की आवश्यकता इसलिए भी महसूस की गई क्योंकि वैश्वीकरण और तकनीकी विकास के कारण शिक्षा प्रणाली तेजी से बदल रही है। ऐसे में केवल पश्चिमी शिक्षा मॉडल पर निर्भर रहना पर्याप्त नहीं है। नीति यह मानती है कि जब शिक्षा अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ी होती है, तब वह अधिक प्रभावी और स्थायी बनती है। भारतीय ज्ञान परम्परा विद्यार्थियों में आत्मगौरव, सांस्कृतिक पहचान और नैतिक चेतना का विकास करती है, जो किसी भी राष्ट्र के लिए अत्यंत आवश्यक है। इसके अतिरिक्त, NEP 2020 शिक्षा में समानता, समावेशिता और गुणवत्ता सुनिश्चित करने की आवश्यकता को भी रेखांकित करती है। नीति के अनुसार सभी वर्गों तक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पहुँचाने के लिए स्थानीय ज्ञान, मातृभाषा और भारतीय संदर्भों को शिक्षा का हिस्सा बनाना आवश्यक है। इसी कारण NEP 2020 में विद्यालयी शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक भारतीय ज्ञान परम्परा को पाठ्यक्रम, शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया और शोध से जोड़ने पर विशेष बल दिया गया है।

इस प्रकार, NEP 2020 की पृष्ठभूमि और आवश्यकता को समझने पर यह स्पष्ट होता है कि यह नीति केवल शैक्षिक सुधारों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह भारतीय शिक्षा प्रणाली को उसकी सांस्कृतिक पहचान के साथ पुनः स्थापित करने का एक व्यापक प्रयास है। भारतीय ज्ञान परम्परा को शिक्षा का

आधार बनाकर NEP 2020 भविष्य की पीढ़ियों को ज्ञानवान, नैतिक, आत्मनिर्भर और जिम्मेदार नागरिक बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध होती है।

5. विद्यालयी शिक्षा में भारतीय ज्ञान परम्परा का समावेश :-

NEP 2020 के अंतर्गत विद्यालयी स्तर पर भारतीय ज्ञान परम्परा को निम्न रूपों में शामिल किया गया है—

5.1 पाठ्यक्रम में समावेश -

- भारतीय इतिहास और संस्कृति
- नैतिक एवं मूल्य शिक्षा
- योग और ध्यान
- स्थानीय ज्ञान एवं लोक परंपराएँ

5.2 शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया -

- अनुभव आधारित सीख
- गतिविधि आधारित शिक्षण
- कहानी, संवाद और जीवन प्रसंगों के माध्यम से शिक्षा

6. उच्च शिक्षा में भारतीय ज्ञान परम्परा -

NEP 2020 उच्च शिक्षा में बहुविषयक (Multidisciplinary) दृष्टिकोण को अपनाती है। इसके अंतर्गत—

- भारतीय दर्शन, संस्कृत, पाली, प्राकृत जैसे विषयों को बढ़ावा।
- भारतीय ज्ञान परम्परा आधारित शोध केंद्रों की स्थापना।
- प्राचीन भारतीय गणित, विज्ञान और चिकित्सा ज्ञान का अध्ययन।
- इससे उच्च शिक्षा अधिक समग्र और भारतीय संदर्भों से जुड़ी होगी।

7. भारतीय भाषाएँ और भारतीय ज्ञान परम्परा :-

भारतीय ज्ञान परम्परा का अधिकांश साहित्य भारतीय भाषाओं में उपलब्ध है। NEP 2020 मातृभाषा और भारतीय भाषाओं में शिक्षा पर विशेष बल देती है।

नीति के अनुसार :—

- प्रारंभिक शिक्षा मातृभाषा में।
- भारतीय भाषाओं में अध्ययन सामग्री का विकास।
- अनुवाद परियोजनाओं के माध्यम से प्राचीन ग्रंथों को सुलभ बनाना।

8. मूल्य शिक्षा और चरित्र निर्माण में भारतीय ज्ञान परम्परा की भूमिका : -

NEP 2020 स्पष्ट करती है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण भी है। भारतीय ज्ञान परम्परा के माध्यम से—

- सत्यनिष्ठा
- सह-अस्तित्व
- सामाजिक उत्तरदायित्व
- नैतिक आचरण
- जैसे मूल्यों का विकास किया जा सकता है। आज के समय में यह अत्यंत आवश्यक है।

9. शिक्षक शिक्षा और भारतीय ज्ञान परम्परा : -

- नीति के अनुसार शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों में भारतीय ज्ञान परंपरा को शामिल किया जाएगा। शिक्षक—
- भारतीय दर्शन से परिचित होंगे
- मूल्य आधारित शिक्षा देंगे
- स्थानीय एवं पारंपरिक ज्ञान को कक्षा से जोड़ेंगे
- इससे शिक्षक की भूमिका केवल अध्यापक की न होकर मार्गदर्शक की बनती है।

10. समकालीन परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता : -

आज शिक्षा में—

- नैतिक पतन
- तनाव
- प्रतिस्पर्धा
- संस्कृति से दूरी

जैसी समस्याएँ दिखाई देती हैं। NEP 2020 में भारतीय ज्ञान परम्परा का समावेश इन समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करता है।

11. चुनौतियाँ : -

- प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी।
- भारतीय ज्ञान परम्परा आधारित पाठ्य सामग्री का अभाव।
- पारंपरिक और आधुनिक ज्ञान में संतुलन।

12. संभावनाएँ : -

- आत्मनिर्भर भारत की ओर कदम।
- वैश्विक स्तर पर भारतीय ज्ञान की पहचान।
- मूल्यपरक और मानवतावादी शिक्षा का विकास।

13. निष्कर्ष (Conclusion) : -

निष्कर्षतः यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि **राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020)** भारतीय ज्ञान परम्परा को पुनर्जीवित करने की दिशा में एक ऐतिहासिक और दूरदर्शी पहल है। यह नीति आधुनिक शिक्षा की आवश्यकताओं और प्राचीन भारतीय ज्ञान के मूल सिद्धांतों के बीच एक सशक्त सेतु का कार्य करती है। NEP 2020 यह स्वीकार करती है कि किसी भी राष्ट्र की शिक्षा प्रणाली तभी प्रभावी और सार्थक हो सकती है, जब वह अपनी सांस्कृतिक जड़ों और ज्ञान परम्परा से जुड़ी हो। इस नीति के माध्यम से भारतीय ज्ञान परम्परा को शिक्षा के विभिन्न स्तरों—विद्यालयी शिक्षा, उच्च शिक्षा, शिक्षक शिक्षा तथा शोध—में समाहित करने का प्रयास किया गया है। भारतीय दर्शन, योग, आयुर्वेद, साहित्य, कला, नैतिकता और जीवन मूल्यों को आधुनिक विषयों के साथ जोड़कर शिक्षा को अधिक समग्र, मूल्यपरक और जीवनोपयोगी बनाने की दिशा में ठोस कदम उठाए गए हैं। इससे शिक्षा केवल डिग्री और रोजगार तक सीमित न रहकर व्यक्ति के सर्वांगीण विकास का माध्यम बन सकती है।

NEP 2020 के अंतर्गत भारतीय ज्ञान परम्परा को अपनाने से विद्यार्थियों में आत्मगौरव, सांस्कृतिक पहचान, नैतिक चेतना और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित होने की संभावना है। यह नीति शिक्षा में रचनात्मकता, आलोचनात्मक चिंतन और नैतिक दृष्टि को प्रोत्साहित करती है, जो 21वीं सदी की चुनौतियों का सामना करने के लिए अत्यंत आवश्यक हैं। साथ ही, मातृभाषा और भारतीय भाषाओं में शिक्षा पर बल देकर नीति शिक्षा को अधिक समावेशी और प्रभावी बनाने का प्रयास करती है।

यदि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को प्रभावी और संवेदनशील तरीके से लागू किया जाए, तो यह भारतीय शिक्षा प्रणाली में व्यापक सकारात्मक परिवर्तन ला सकती है। इससे न केवल शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार होगा, बल्कि समाज में नैतिक मूल्यों, सांस्कृतिक समरसता और मानवीय संवेदनाओं का भी विकास होगा। भारतीय ज्ञान परम्परा के आधार पर विकसित शिक्षा प्रणाली देश को ज्ञान-समृद्ध, मूल्य-आधारित और आत्मनिर्भर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

अतः यह कहा जा सकता है कि NEP 2020 केवल एक नीतिगत दस्तावेज नहीं है, बल्कि यह भारतीय शिक्षा के पुनर्निर्माण की दिशा में एक दूरगामी दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है। भारतीय ज्ञान परम्परा के साथ आधुनिक शिक्षा का समन्वय भारत को वैश्विक स्तर पर एक सशक्त, नैतिक और ज्ञान आधारित राष्ट्र के रूप में स्थापित करने में सहायक सिद्ध हो सकता है।

भविष्य की संभावनाएँ एवं सुझाव (Future Scope and Suggestions) : –

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत भारतीय ज्ञान परम्परा को शिक्षा प्रणाली में शामिल करने की व्यापक संभावनाएँ हैं। यदि इस नीति का प्रभावी, योजनाबद्ध और सतत क्रियान्वयन किया जाए, तो भारतीय शिक्षा प्रणाली में दूरगामी सकारात्मक परिवर्तन संभव हैं। **इस संदर्भ में निम्नलिखित भविष्य की संभावनाएँ एवं सुझाव प्रस्तुत किए जा सकते हैं—**

प्रथम, विद्यालयी स्तर पर भारतीय ज्ञान परम्परा को कहानी, गतिविधि, परियोजना कार्य और अनुभव आधारित अधिगम के माध्यम से पढ़ाया जाना चाहिए। इससे विद्यार्थियों में भारतीय संस्कृति, नैतिक मूल्यों और जीवन कौशल का विकास सहज रूप से हो सकेगा। पाठ्यपुस्तकों में भारतीय ज्ञान परम्परा से जुड़े विषयों को सरल और रुचिकर भाषा में प्रस्तुत करना आवश्यक है।

द्वितीय, उच्च शिक्षा संस्थानों में भारतीय ज्ञान परम्परा से संबंधित पाठ्यक्रम, वैकल्पिक विषय (Elective Courses) और प्रमाणपत्र कार्यक्रम (Certificate Courses) प्रारंभ किए जाने चाहिए। इसके साथ ही विश्वविद्यालयों में **Indian Knowledge System (IKS) Centers** की स्थापना कर शोध, नवाचार और अंतर्विषयक अध्ययन को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

तृतीय, शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों में भारतीय ज्ञान परम्परा को अनिवार्य रूप से शामिल किया जाना चाहिए। शिक्षकों को भारतीय दर्शन, नैतिक शिक्षा, योग, ध्यान और पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों से परिचित कराना आवश्यक है, ताकि वे कक्षा में इन मूल्यों को प्रभावी रूप से स्थानांतरित कर सकें।

चतुर्थ, भारतीय भाषाओं में गुणवत्तापूर्ण अध्ययन सामग्री, शोध पत्र, पाठ्यपुस्तकें और डिजिटल संसाधनों का विकास किया जाना चाहिए। प्राचीन ग्रंथों के सरल अनुवाद और आधुनिक व्याख्या से विद्यार्थियों और शोधार्थियों को भारतीय ज्ञान परम्परा को समझने में सुविधा होगी।

पंचम, भारतीय ज्ञान परम्परा और आधुनिक विज्ञान एवं तकनीक के बीच समन्वय स्थापित करने पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। योग, आयुर्वेद, गणित, खगोल विज्ञान और पर्यावरण संबंधी पारंपरिक ज्ञान को आधुनिक संदर्भ में प्रस्तुत कर वैश्विक स्तर पर भारत की बौद्धिक पहचान को सशक्त बनाया जा सकता है।

अंततः, भविष्य में भारतीय ज्ञान परम्परा पर आधारित तुलनात्मक अध्ययन, अंतरराष्ट्रीय शोध सहयोग और नीति-आधारित अनुसंधान की व्यापक संभावनाएँ हैं। इससे न केवल भारतीय शिक्षा प्रणाली सुदृढ़ होगी, बल्कि भारत एक ज्ञान-आधारित, मूल्यपरक और मानवतावादी समाज के रूप में वैश्विक मंच पर अपनी विशिष्ट पहचान स्थापित कर सकेगा।

इस प्रकार, NEP 2020 के अंतर्गत भारतीय ज्ञान परम्परा का प्रभावी क्रियान्वयन शिक्षा के क्षेत्र में एक सकारात्मक और स्थायी परिवर्तन ला सकता है।

संदर्भ (References) –

- शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार (2020). *राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020.* नई दिल्ली: भारत सरकार।
- भारत सरकार(2019). *राष्ट्रीय शिक्षा नीति का प्रारूप.* नई दिल्ली: मानव संसाधन विकास मंत्रालय।
- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद(2021). *विद्यालयी शिक्षा में भारतीय ज्ञान प्रणाली का एकीकरण.* नई दिल्ली: एनसीईआरटी।
- राधाकृष्णन, एस(2009). *भारतीय दर्शन* (खंड 1–2). नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
- अरविन्दो, श्री(2005). *भारतीय संस्कृति की आधारशिला.* पांडिचेरी: श्री अरविन्द आश्रम।
- अल्तेकर, ए. एस(2016). *प्राचीन भारत में शिक्षा.* दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।
- दास, बी. एन. (2014). *भारतीय शैक्षिक चिंतन.* नई दिल्ली: कनिष्क पब्लिशर्स।
- विवेकानंद, स्वामी(2014). *शिक्षा पर व्याख्यान.* कोलकाता: अद्वैत आश्रम।
- मुखर्जी, एस(2015). *प्राचीन भारतीय शिक्षा.* नई दिल्ली: अटलांटिक पब्लिशर्स।
- काक, एस. (2021). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और भारतीय ज्ञान प्रणाली। *भारतीय शिक्षा पत्रिका,* 46(4), 1–15।
- जोशी, के. एम (2020). उच्च शिक्षा में भारतीय ज्ञान प्रणाली का पुनर्स्थापन। *यूनिवर्सिटी न्यूज,* 58(35), 6–11।
- शर्मा, आर., एवं गुप्ता, ए. (2021). समकालीन शिक्षा में भारतीय ज्ञान प्रणाली की प्रासंगिकता: राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में एक अध्ययन। *अंतरराष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान पत्रिका,* 9(2), 45–52।
- मिश्रा, पी(2021). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में भारतीय ज्ञान प्रणाली एवं शिक्षक शिक्षा। *शिक्षक शिक्षा एवं अनुसंधान पत्रिका,* 16(2), 112–120
- यूनेस्को (2021). *हमारे भविष्य की पुनर्कल्पना: शिक्षा हेतु एक नया सामाजिक अनुबंध.* पेरिस: यूनेस्को।
- विश्वविद्यालय अनुदान आयोग(2021). *उच्च शिक्षा में भारतीय ज्ञान प्रणाली के समावेशन हेतु दिशा-निर्देश.* नई दिल्ली: विश्वविद्यालय अनुदान आयोग।
- अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद.(2022). *भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS): रूपरेखा एवं पहल.* नई दिल्ली: एआईसीटीई।